

वार्ता-460, बेंगलोर (कर्ना.), ता: 7.12.07

सूर्यवंशियों की निशानियाँ

Disc.CD No.460, Bangalore (Karnatak), dt. 7.12.07

Indications of Suryavanshis

10.44

प्रश्न :- बाबा, सत्य नारायण कहते हैं ना। सत्य लक्ष्मी-नारायण नहीं कहते हैं। क्यों? कारण क्या?

उत्तर :- लक्ष्मी ने सत्य को स्वीकार नहीं किया होगा पहले। जब सत्य, सत्य के रूप में निकलता है, तो सत्य के लिए कहा जाता है - सत्य अगर कोई न माने, तो सत्य सर के ऊपर चढ़कर के बोलता है। क्या? सच्चाई को अगर कोई पाँव से ठुकराता है, तो उसका अंजाम क्या होगा? सच्चाई सर के ऊपर चढ़कर के बोलेगी और कोई उसे रोक नहीं सकेगा। ऐसे ही लक्ष्मी कहो, राधा कहो, वो चंद्रवंश से आती है या सूर्यवंश से आती है? चंद्रवंश से आती है। सूर्य में और सूर्यवंशियों में अपना उजाला होता है रोशनी का, ज्ञान का, या चंद्रमा में और चंद्रवंशियों में उजाला अपना ज्ञान का होता है?.....

Time: 10.44

Question: Baba, people say 'Satya Narayan' (True Narayan) don't they? They do not say 'Satya Lakshmi' (True Lakshmi). Why? What is the reason?

Answer: Lakshmi must not have accepted the truth first. When truth emerges in the form of truth, then it is said for the truth, that if anyone does not accept the truth, then truth speaks for itself. What? If anyone kicks away the truth, then what would be its result? Truth will speak for itself and nobody will be able to stop it. Similarly, call her Lakshmi or Radha, does she come from the Moon dynasty or from the Sun Dynasty? She comes from the Moon Dynasty. Does the Sun and those who belong to the Sun Dynasty (*Suryavanshis*) have light of their own, the light of knowledge or does the Moon and those who belong to the Moon Dynasty (*Chandravanshis*) have the light of knowledge of their own?.....

.....सूर्य में अपना उजाला होता है। खून ही ऐसा है संकल्पों का। तो उनमें जन्म-जन्मांतर की सच्चाई है। जिस देश में जन्म-जन्मांतर की सच्चाई हो, वो देश कभी नेस्तनाबूद नहीं होता और जिन देशों में झूठा पनपता है, झूठे आके जन्म लेते हैं और झूठे ही राज्य करते हैं, वो सदा काल स्थायी नहीं रह सकते। न पहले थे और न अब बाद में रहेंगे। इसलिए गीता में लिखा है - "नासते विद्यते भावो"। क्या? असत्य जो है, कभी हमेशा स्थायी नहीं रह सकता। कहते हैं - झूठ के पाँव नहीं होते हैं और सच्चाई जो है, वो सदैव स्थायी रहती है।

.....The Sun has light of its own. The blood of thoughts itself is like this. So, they have the truth of many births. The country, which nurtures truth for many births cannot be destroyed (*nestanaabood*) completely and the countries, where false people prosper, where the false ones come and take birth and where only the false people rule, cannot exist forever. They neither existed earlier nor will they exist now (or) later on. That is why it has been written in the Gita - 'Naastey vidyatey bhavo'. What? Falsehood cannot exist forever. It is said, that falsehood does not have legs and the truth exists forever.

21.59

प्रश्न :- बाबा , एडवांस ज्ञान कहते हैं ना? एडवांस ज्ञान करके क्यों कहते हैं?

उत्तर :- इसलिए कहते हैं कि - इसमें बेसिक में बताया जाता है - मैं आत्मा बिंदी और मेरा बाप बिंदी। लेकिन बिंदी-बिंदी तो 500 करोड़ आत्माएँ हैं, उनमें कौन-सा बाप है और कौन-सी मैं आत्मा हूँ, इसका पता नहीं चलता। एडवांस उसे कहा जाता है, जिसमें पता चले कि ये आत्मा बिंदी, सुप्रीम सोल बाप और वो सुप्रीम सोल बाप जो भी बिंदी-बिंदी आत्माएँ जन्म-मरण के चक्र में आने वाली हैं, उन आत्माओं के बीच में हीरो पार्टधारी ये है। हम उस

हीरो पार्टधारी में उस ज्योति बिन्दु बाप को याद करते हैं। अगर निश्चयात्मक बुद्धि बैठ जाए तो सही बात।, ये है एडवांस, और उस बाप के आधार पर अपने पार्ट का भी पता लगाएगा कि मैं बाप के कितने नजदीक हूँ। उस बाप के, जो साकार में इस सृष्टि पर है, प्रैक्टिकल में पार्ट बजाय रहा है, उसके दिल पर मैं सबसे जास्ती चढ़ा हुआ हूँ। माला में पहला नंबर अगर बाप का है, तो दूसरा नंबर मेरा। तीसरा मणका कहेगा – नहीं, तुम्हारा दूसरा नंबर है तो मेरा तीसरा नंबर है। कोई हो मैदान में तो लगाए हाथ। ऐसे क्लीयर हो जावेंगे।

Time: 21.59

Question: Baba, it is said –advance knowledge, isn't it? Why is it called the advance knowledge?

Answer: It is said because it is taught in the basic knowledge, I, a soul, am a point and my father is a point. But 500 crore souls are points; among them which one is the Father and which point am I, the soul, this cannot be known. Advance is said to be that (knowledge) where one can know that this point-like soul is the Supreme Soul Father; and that Supreme Soul Father is the hero actor among the point-like souls which pass through the cycle of birth and death. We remember that point of light Father in that hero actor. If the intellect develops faith that this is correct, this is the advance knowledge; and will find out its own part too on the basis of the part of that Father that how close I am to the Father; whether I occupy the best place in the heart of the Father, who is in a corporeal form and is practically playing a part in this world. If the first number in the rosary belongs to the Father, then the second number is mine. The third bead will say – No, if your number is second then mine is the third number. If there is anyone (worthy) in the (battle) field then they can compete with me. They will become clear in this way.

बाबा तो सिर्फ इशारा देते हैं। क्या? (किसी ने कहा – ये तीखा है) हाँ, जो देव आत्माएँ होंगी नंबरवार या अष्टदेव होंगे नंबरवार, वो इस इशारे को कैच करेंगे ओर अपनी सीट पर सेट हो करके एक्ट करेंगे। दुनियाँ बक-बक-बक-बक करती रहे। (भाई ने कहा – पहले एक्ट करके दिखाया इसलिए एडवांस ज्ञान?) जब तक प्रैक्टिकल एक्ट करके न दिखाए, काम करके न दिखाए तो उनका नाम कैसे पड़ेगा कि ये अमुक देवता हैं। एक्ट के आधार पर ही तो नाम शास्त्रों में पड़े हैं।

.....Baba just gives hints. What? (Someone said – This one is sharp) Yes, the numberwise deity souls or the numberwise eight deities will catch this hint and will act by becoming set in the seat. The world may keep speaking wasteful things. (The brother said – Is it advance knowledge just because someone acts first and shows?) Until someone shows by doing a practical act, by performing the task, how can he be named as a particular deity? The names in the scriptures are based on the act itself.

54.10

प्रश्न :- बाबा, ब्रह्मा सो विष्णु पहले बनेगा या अष्टदेव पहले डिक्लेअर होंगे?

उत्तर :- डिक्लेअर होना अलग बात, सीट पर सेट होना अलग बात और संसार में प्रत्यक्ष होना अलग बात। जो अष्टदेव हैं, वो सारी सृष्टि के पितर हैं या बच्चा हैं? पितर हैं। जो पितर हैं, वो बाप समान स्टेज वाले होंगे या बच्चों की स्टेज वाले होंगे? (किसी ने कहा – बाप समान) जो बाप का विरुद्ध है – “फादर शोज सन्स। सन शोज फादर।” तो अगर आठ अष्ट देव फादर को फालो नहीं करेंगे, अपने को प्रत्यक्ष करेंगे तो असुर बनेंगे या देवता बनेंगे? फिर तो उनको असुर, असुरदेव कहा जाए। अष्टासुर नाम होना चाहिए। लेकिन वो क्या हैं? अष्टदेव हैं।....

Time: 54.10

Question: Baba, will Brahma transform into Vishnu first or will the eight deities be declared first?

Answer: Being declared is a different thing; becoming set on a seat is a different thing and being revealed to the world is a different thing. Are the eight deities the ancestors (*pitar*) of the entire world or are they the children? They are the ancestors. Will those who are the ancestors have a stage like that of a father or will they have a stage of the children? (Someone said – equal to the Father) It is the promise (*virud*) of the Father “Father shows sons. Son shows father.” So, if the eight deities do not follow the Father, if they reveal themselves, then will they become demons or will they become deities? Then they will be called demons, demon-like deities. (Then) their name should be ‘the eight demons’. But what are they? The eight deities.....

.....जो घर के बड़े होते हैं परिवार के, उनकी इच्छा होती है – हमारे बच्चे आगे बढ़ें। बाप को फालो करने वाले हैं। तो जो बाप का काम सो बच्चों का काम। सुप्रीम सोल बाप आ करके बच्चों को प्रत्यक्ष करता है। तो बच्चों का क्या कर्तव्य है? बच्चे अपने बच्चों को प्रत्यक्ष करें। बाप आकर के ओबिडिएन्ट सर्वेन्ट बनता है बच्चों का कि उनके ऊपर अधिकारी बनकर के बैठता है? हैं? सर्वेन्ट बनके रहता है ना। तो जो असली बच्चे होंगे बाप के, वो भी क्या करेंगे? वो भी तो ओबिडिएन्ट सर्वेन्ट बन करके ही रहेंगे ना।

....Those who are the elders of a household, of a family wish that their children should progress. If they follow the father, then whatever is the father’s task should be the task of the children. The Supreme Soul Father comes and reveals the children. So, what is the duty of the children? The children should reveal their children. Does the Father come and become the obedient servant of the children or does He control them as their Superior? Hm? He remains their servant, does He not? So, what will the Father’s true children do as well? They too will remain as the obedient servants, won’t they?

.....
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.